EDUZONE: International Peer Reviewed/Refereed Multidisciplinary Journal (EIPRMJ), ISSN: 2319-5045
Volume 12, Issue 1, January-June, 2023, Available online at: www.eduzonejournal.com

शक्ति–आराधना का स्तोत्र: तुलसी कृत हनुमानबाहुक

प्रो० संजीव कुमार

चेयर प्रोफ़ेसर, सन्त साहित्य शोध पीठ, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध–पत्र–सार

हनुमानबाहुक' महाकवि तुलसीदास की उल्लेखनीय कृति है जिसमें महावीर हनुमान जी की स्तुति की गयी है। इस कृति की रचना के पीछे कवि का मूल उद्देश्य स्वयं को रोग–शोक से उपरत करने के लिए कृपानिधान हनुमान जी की स्तुति करना है। तुलसी युगद्रष्टा कवि हैं। वे सजग समाज सुधारक हैं। इस कृति में भी कवि ने हनुमान जी से निवेदन किया है कि वे राक्षस – राक्षसनियों का संहार करके इस समाज को अमर्यादा, अपसंस्कृति, मूल्यहीनता, पापाचार, भ्रष्टाचार, दुराचार आदि रोगों से मुक्त करें। दरिद्रता रूपी रावण का विनाश, भीख जैसी मलिनता की समाप्ति कवि के काव्य का उद्देश्य है। कवि की प्रार्थना है कि करुणा, धैर्य, साहस, बल के अतुलित भण्डार हनुमान जी प्रत्येक व्यक्ति को पाप, शाप और संताप से मुक्ति प्रदान करके उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदत्त करें। समन्वय की विराट् चेतना से आलोकित 'हनुमानबाहुक' मूल्यों की स्थापना का काव्य है जिसका विशद् लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति को और समस्त समाज को रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय, नैराश्य, उदासी, जड़ता, खिन्नता से मुक्ति प्रदान करके शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ, नीरोग और सुसंस्कृत बनाना है। स्वस्थ काया और विकाररहित समाज ही प्रबल राष्ट्रीय चेतना से उद्भासित हो सकता है।

मुख्य शब्द –स्तोत्र, स्तुति, विक्रमाब्द, औषध, परिलक्षित, दरिद्रता, विपन्नता, नैराश्य, भयंकर, विकराल, अन्तःकरण, भास्वरता, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, पूतना, पिशाचिनी, अक्षय कुमार, रावण, मेघनाद, अकम्पन, कुम्भकर्ण, भक्तशिरोमणि, सम्पोषक, मूल्यहीनता, अमर्यादा, कृपानिधान, पाप, शाप, संताप

हनुमानबाहुक' गोस्वामी तुलसीदास कृत काव्य है। 'बाहुक' का शाब्दिक अर्थ है – 'बन्दर', 'अधीन', 'आश्रित'।[1] स्पष्ट है कि इस काव्य में भक्तप्रवर तुलसी दासस्य भाव से हनुमान–स्तुति कर रहे हैं। 'हनुमानबाहुक' को तुलसी की प्रामाणिक रचना स्वीकार करते हुए डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं, ''हनुमानबाहुक को भी तुलसी की प्रामाणिक रचना माना जाता है। . . . वस्तुतः यह बहुत ही प्रौढ़ शैली में रचित स्तोत्र काव्य है।''[2] डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ने भी 'हनुमानबाहुक' को तुलसी की प्रामाणिक रचना माना है, ''इनकी दो प्रामाणिक रचनाएँ और मानी जाती हैं – 'हनुमानबाहुक' एवं कलि धर्माधर्म निरूपण'।''[3]

यहाँ पर 'हनुमानबाहुक' की रचना के कारण पर विचार करना भी प्रासंगिक होगा। पुस्तक की रचना के कारण पर प्रकाश डालते हुए इस पुस्तक के टीकाकार महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य 'वीर' प्रस्तावना में लिखते हैं, ''संवत् 1664 विक्रमाब्द के लगभग गोस्वामी तुलसीदास जी की बाहुओं में वात–व्याधि की गहरी पीड़ा उत्पन्न हुई थी और फोड़े–फुँसियों के कारण सारा शरीर वेदना का स्थान–सा बन गया था। औषध, यन्त्र, मन्त्र, त्रोटक आदि अनेक उपाय किये गये, किन्तु घटने के बदले रोग दिनोंदिन बढ़ता ही जाता था। असहनीय कष्टों से हताश होकर अन्त में उसकी निवृत्ति के लिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने हनुमान जी की वन्दना आरम्भ की। अंजनी कुमार की कृपा से उनकी सारी व्यथा नष्ट हो गयी।''[4] स्वयं सन्तप्रवर तुलसी ने अनेक स्थानों पर अपनी असहनीय पीड़ा का मार्मिक वर्णन किया है और हनुमान जी से प्रार्थना की है कि वे पीड़ा का निराकरण करके उन्हें रोग–शोक से मुक्त करें –

''साहसी समीर के दुलारे रघुबीरजू के,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये''[5]

वेदना–पीड़ा का विकट रूप तो हमें निम्नलिखित पंक्तियों में परिलक्षित होता है, जहाँ तुलसीदास व्याकुल भाव से दीनतापूर्वक हनुमान जी से कृपा की अभ्यर्थना करते हैं –

''पायैपीर पेटपीर बाँहपीर मुँहपीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है।
x x x x x
हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेही तें,
ओट रामनाम की ललाट लिखि लई है।
कुंभजके किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,
हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है।।''[6]

भक्तप्रवर तुलसीदास महान् कवि हैं और हनुमानबाहुक में भी उनकी महानता का विशद् रूप परिलक्षित होता है जहाँ वे हनुमान जी से यह निवेदन करते हैं कि वे समाज से दरिद्रता का विनाश कर दें। तुलसी का अपना बचपन अत्यधिक विपन्नता में व्यतीत हुआ। अपनी बेबसी, लाचारी, निर्धनता पर प्रकाश डालते हुए कवि लिखते हैं – 'बाल्यावस्था से ही मेरा मन सहज भाव से राम की ओर उन्मुख हो गया। मैं राम–नाम लेकर टुकड़ा माँग कर खाता था' –

''बालेपन सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं।''[7]

अन्यत्र भी वे अपनी दयनीय दशा का वर्णन करते हुए लिखते हैं – 'भोजन और वस्त्र से रहित, भयंकर नैराश्य में लीन, दीन–दुर्बल देखकर कौन हाय–हाय नहीं करता था। ऐसे अनाथ को दयासागर रघुनाथ जी ने सनाथ करके अपने स्वभाव से उत्तम फल दिया –

''असन – बसन – हीन बिषम – बिषाद – लीन
देखि दीन दूबरो करै न हाय–हाय को।
तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभायको।।''[8]

स्पष्ट है कि महाकवि तुलसी का बचपन निराशा, कुण्ठा, अवसाद, उदासी, निर्धनता से युक्त रहा, इसलिये निर्धनता को दस मुखों वाले रावण के समान भयंकर, विकराल, विकट मानते हुए महामति तुलसी महाबलशाली हनुमान जी से उसका वध करने की याचना करते हैं –

''दसमुख दुसह दरिद्र दरिबे को भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।''[9]

भीख माँगना अभिशाप है। तुलसी का बचपन भोजन और वस्त्र भीख में माँग–माँग कर व्यतीत हुआ। भीख माँगने में जिस लाँछना, अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार को झेलना पड़ता था उसकी गहरी टीस तुलसी के अन्तःकरण में कील की तरह धँसी हुई थी। भीख को मैला या मलयुक्त मानते हुए रामभक्त तुलसी भीख रूपी मलीनता का नाश करके आनन्द, हर्ष और उल्लास का संचार करने की अनुनय हनुमान जी से करते हैं –

''खल–दुख–दोषिबेको, जन–परितोषिबेको,
मॉंगिबो मलीनताको मोदक सुदान भो।
आरतकी आरति निवारिबेको तिहूँ पुर,
तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो।''[10]

'हनुमानबाहुक' में तुलसी की समन्वय–भावना का विराट् रूप पूर्ण भास्वरता के साथ प्रकट हुआ है। कवि हनुमान जी को कपिनाथ, रघुनाथ, भोलानाथ, भूतनाथ कहते हुए उनसे रोग रूपी महासागर को गाय के खुर के समान करने की प्रार्थना करता है।

''कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै।।''[11]

अन्यत्र वे हनुमान जी को राजा रामचन्द्र के स्नेही और शंकर जी के रूप वाला बतलाते हुए उन्हें अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष का प्रदाता बताते हैं –

''वामदेव–रूप, भूप रामके सनेही, नाम
लेत–देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ।।''[12]

महनीय तुलसीदास हनुमान जी के विराट् स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि आप सृष्टि–रचना के लिये ब्रह्मा, पालक के रूप में विष्णु, मारने में रुद्र, जिलाने के लिए अमृतपान के समान, धारण करने में धरती, अन्धकार का नाश करने में सूर्य, सुखाने में अग्नि, पोषण करने में चन्द्रमा और सूर्य हैं –

''रचिबेको बिधि जैसे, पालिबेको हरि, हर
मीच मारिबेको, ज्याइबेको सुधापान भो।
धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबेको,
सोखिबे कृसानु, पोषिबेको हिम–भानु भो।।[13]

रामभक्त तुलसी, हनुमान जी के दास तुलसी, हनुमान जी को बाल कृष्ण बतलाकर पूतना पिशाचिनी के समान बाहु की पीड़ा को मारने का निवेदन कर रहे हैं –

''पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसीकी,
बॉंहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी।।''[14]

बाहु–रोग को राक्षस – राक्षसनियों के समान बतलाकर महामति तुलसीदास ने रोग को समाप्त करने के निवेदन के साथ–साथ असुर संहार की व्यापक समाजोपयोगी योजना प्रस्तुत की है। सच तो यह है कि तुलसी जैसा समाज–सुधारक साहित्य में छिपी सर्वजन हिताय की मंगलकारी – कल्याणकारी दृष्टि का त्याग तब भी नहीं कर सकता जबकि वह स्वयं भी रोग की मर्मांतक पीड़ा से व्याकुल है। रूपक के माध्यम से रोग रूपी रक्षसों के संहार का समाज–सापेक्ष दृश्य परिलक्षित है –

''बाहुक–सुबाहु नीच लीचर–मरीच मिलि,
मुँहपीर–केतुजा कुरोग जातुधान है।
राम नाम जपजाग कियो चहों सानुराग,
काल जैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं।।
x x x x x
तुलसी सँभारी ताड़का–सँहारी भारी भट,
बेधे बरगदसे बनाइ बानवान हैं।।''[15]

सिंहिका, सुरसा, लंकिनी आदि के माध्यम से कवि हनुमान जी से नम्रतापूर्वक निवेदन कर रहे हैं कि आपने इन राक्षसनियों का संहार किया है, मेरा रोग तो बहुत छोटा है, इसका वध क्यों नहीं करते –

''सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारी मारि बाटिका उजारी है।
भीर बाँहपीर की निपट राखी महाबीर,
कौनके सकोच तुलसीके सोच भारी है।।''[16]

वे अक्षय कुमार, रावण, मेघनाद, अकम्पन और कुम्भकर्ण के संहार का स्मरण करवाते हुए वज्रांग हनुमान जी से याचना करते हैं कि वे तुलसी की पाप, शाप और संताप से रक्षा करें –

''अच्छ – बिमर्दन कानन – भानि दसानन आनन भा न निहारो।
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न – से कुँजर केहरि – बारो।।
राम – प्रताप – हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीरदुलारो।
पापतें, सापतें, ताप तिहूँतें सदा तुलसी कहँ सो रखवारो।।''[17]

'हनुमानबाहुक' में हनुमान जी की विशद् स्तुति के साथ–साथ मानवमूल्यों की प्रतिष्ठा की गयी है। पवन – सुत हनुमान जी का जन्म ही संस्कृति – रक्षण और विकृति – भक्षण के लिए ही हुआ है। हनुमान जी की प्रशंसा करते हुए भक्तशिरोमणि तुलसीदास जी लिखते हैं –

''दुर्जनको कालसो कराल पाल सज्जनको,
सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको।
सीय–सुखदायक दुलारो रघुनायक को,
सेवक सहायक है साहसी समीरको।।''[18]

मर्यादा, संस्कृति और मूल्यों के सम्पोषक, भक्तों को पाप, शाप और संताप से मुक्ति दिलाने वाले बजरंगबली हनुमान जी के तेज, बल, साहस, धैर्य, पराक्रम और शौर्य की स्तुति करते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं –

''कुंभकर्न – रावन – पयोदनाद – ईंधनको
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान –
सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो।।''[19]

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में हम कह सकते हैं कि 'हनुमानबाहुक' महाकवि तुलसीदास की उल्लेखनीय कृति है जिसमें महावीर हनुमान जी की स्तुति की गयी है। इस कृति की रचना के पीछे कवि का मूल उद्देश्य स्वयं को रोग–शोक से उपरत करने के लिए कृपानिधान हनुमान जी की स्तुति करना है। तुलसी युगद्रष्टा कवि हैं। वे सजग समाज सुधारक हैं। इस कृति में भी कवि ने हनुमान जी से निवेदन किया है कि वे राक्षस – राक्षसनियों का संहार करके इस समाज को अमर्यादा, अपसंस्कृति, मूल्यहीनता, पापाचार, भ्रष्टाचार, दुराचार आदि रोगों से मुक्त करें। दरिद्रता रूपी रावण का विनाश, भीख जैसी मलिनता की समाप्ति कवि के काव्य का उद्देश्य है। कवि की प्रार्थना है कि करुणा, धैर्य, साहस, बल के अतुलित भण्डार हनुमान जी प्रत्येक व्यक्ति को पाप, शाप और संताप से मुक्ति प्रदान करके उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदत्त करें। समन्वय की विराट् चेतना से आलोकित 'हनुमानबाहुक' मूल्यों की स्थापना का काव्य है जिसका विशद् लक्ष्य प्रत्येक व्यक्ति को और समस्त समाज को रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय, नैराश्य, उदासी, जड़ता, खिन्नता से मुक्ति प्रदान करके

शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ, नीरोग और सुसंस्कृत बनाना है। स्वस्थ काया और विकाररहित समाज ही प्रबल राष्ट्रीय चेतना से उद्भासित हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ –सूची

1सम्पा० कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, बृहत् हिन्दी कोश, पृ० 807
2डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० 189
3डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, पृ० 221
4टीकाकार पं० महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य 'वीर', हनुमानबाहुक, प्रस्तावना
5गोस्वामी तुलसीदास, हनुमानबाहुक, पृ० 30
6वही, पृ० 54
7वही, पृ० 58
8वही, पृ० 59
9वही, पृ० 14
10वही, पृ० 18
11वही, पृ० 62
12वही, पृ० 22
13वही, पृ० 18
14वही, पृ० 37
15वही, पृ० 56–57
16वही, पृ० 40
17वही, पृ० 28
18वही, पृ० 16
19वही, पृ० 12